International Journal of Literacy and Education

E-ISSN: 2789-1615
P-ISSN: 2789-1607
Impact Factor: 5.69
IJLE 2023; 3(1): 80-83
Received: 09-11-2022
Accepted: 16-12-2022

महेश भालसे
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव
प्राचार्य, श्रीराम कालेज, रौरा जिला रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

Corresponding Author:
महेश भालसे
शोधार्थी शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत

माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन

महेश भालसे, डॉ. अखिलेश कुमार श्रीवास्तव

सारांश
प्रस्तुत शोध पत्र माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता पर आधारित है। जीवन कौशल की संकल्पना जीवन की उस विधि से संबंधित है जो शिक्षा में ज्ञान, मनोवृत्ति और अंतर्वयक्तिक कौशल हेतु परस्पर आदान–प्रदान पर बल देती है। शिक्षार्थियों में विविध कौशलों का विकास कर उन्हें जीवन की चुनौतियों का दृढ़ता से सामना करने के लिए तैयार करना ही इसका उद्देश्य है। शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव से जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध पाया जाता है। माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध धनात्मक पाया जाता है।

कूट शब्दः माध्यमिक स्तर, अनुसूचित जाति, विद्यार्थी, शैक्षिक विकास, जीवन कौशल, खरगोन जिला।

1. प्रस्तावना
प्रदेश में अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या 153.16 लाख (जनगणना 2011 के अनुसार) जो कि राज्य की कुल जनसंख्या का 21.10 प्रतिशत है, इस प्रकार मध्यप्रदेश देश का ऐसा राज्य है, जहाँ हर पांचवा व्यक्ति अनुसूचित जनजाति वर्ग का है। इन वर्गों के कल्याण एवं विकास को सुनिश्चित करने के लिए प्रदेश की आयोजना मद का 21.10 प्रतिशत हिस्सा अनुसूचित जनजाति उपयोजना की अवधारणा के तहत पृथक से प्रावधानित किया जाता है।
शैक्षणिक स्तर एवं आर्थिक सुदृढ़ता किसी भी वर्ग की सामाजिक स्थिति की पहचान होते हैं। इसलिए विभाग का लक्ष्य अनुसूचित वर्गो का शैक्षणिक एवं आर्थिक उत्थान कर उन्हें समाज के अगले पायदान पर लाना हैं । मध्यप्रदेश ऐसा राज्य है, जहाँ आदिवासी विकासखण्डों में शिक्षा का संचालन जनजातीय कार्य विभाग द्वारा किया जाता है।
मध्यप्रदेश के 89 आदिवासी विकासखण्डों में प्राथमिक शिक्षा से लेकर हायर सेकेण्डरी तक की शिक्षा का दायित्व विभाग के पास है। इन विकासखण्डों में नवीन शैक्षणिक संस्थाओं को खोलना, पदों का निर्माण तथा नियन्त्रण विभाग द्वारा किया जाता है। विभाग द्वारा जनजाति छात्र–छात्राओं को विभिन्न प्रकार की छात्रवृत्तियाँ स्वीकृत एवं वितरण करने के साथ–साथ समस्त छात्रावास/आश्रमों एवं अन्य आवासीय संस्थाओं का संचालन भी किया जा रहा है। जिसमें जनजाति वर्ग के बालक एवं बालिका निवास कर शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं।
राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिये एक ऐतिहासिक पहल थी, जिसमें शिक्षा क्षेत्र में गहन सुधार और एक प्रणालीगत बदलाव का आह्वान किया गया था। इस नवीन नीति में जीवन कौशल (Life Skills) को पाठ्यक्रम के अंग के रूप में शामिल करने की अनुशंसा की गई जहाँ दृष्टिकोण यह है कि हमारी भावी पीढ़ियों के समग्र विकास पर ध्यान केंद्रित करने के लिये शिक्षा को महज शैक्षणिक परिणामों तक सीमित नहीं रहना चाहिये बल्कि हमें इससे आगे बढ़ने की आवश्यकता है।
संयोग से यह नीति एक ऐसे समय सामने आई जब दुनिया कोविड–19 महामारी की चपेट में थी। स्वास्थ्य संकट इस समयावधि की विशिष्टता थी और समग्र रूप से शिक्षा एवं सीखने के अवसरों को हो रही हानि को प्रकट कर रही थी।
मानव मस्तिष्क जिज्ञासु व क्रियाशील है, और प्रयोग प्रगति की जननी। आज चहुँ और विकास दृष्टिगोचर हो रहा है। वह निरन्तर किए गए अनुसंधानों का ही परिणाम है। इसी तरह शिक्षा भी एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य अर्जित ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी में प्रसारित करना है। कौशल शब्द की अर्थपरक जटिलताओं में न जाकर सामान्यतः कौशल से अभिप्राय उस व्यक्तिगत निपुणता से है जिसे वह दैनिक–जीवन यापन के साथ–साथ शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग करता है। कलम पकड़ना एक साधारण सा कौशल है, जबकि क्रिकेट खेलना एक जटिल दक्षता है।

चलने का कौशल स्वयं में आता है जबकि बोलने के कौशल में वातावरण एक प्रभावशाली भूमिका निभाता है। फुटबॉल खिलाड़ी का गेंद लुढ़काना चालक का बस चलाना आदि कार्यों में अभ्यास द्वारा दक्षता का विकास होता है, जबकि अन्य कौशल यथा तर्कपूर्ण चिन्तन तथा सृजनात्मक अभिव्यक्ति आदि बोध और चिंतन से विकसित होते हैं।

जीवन कौशल अनुकूल और सकारात्मक व्यवहार के लिए ऐसी क्षमताएँ हैं, जो कि व्यक्ति को दैनिक जीवन की समस्याओं और चुनौतियों से प्रभावी रूप से सामना करने का सामर्थ्य प्रदान करती हैं। जीवन एक अनुपम उपहार है। अतः जीवन को विविध कौशलों से युक्त कर जीवन में सुख, शान्ति व समृद्धि का सृजन होता है। जीवन कौशल की शिक्षा देने का कार्य शिक्षा जगत् का है। शिक्षा जगत् में जीवन कौशल की अपनी विशिष्ट अवधारणा है। वह शिक्षा जो शिक्षार्थी को समाजोपयोगी, राष्ट्रोपयोगी व सम्पूर्ण मानवता के लिए उपयोगी बना सके। व्यक्तित्व के चहुँमुखी विकास से शिक्षा व शिक्षालयों को सार्थकता प्रदान कर सके। व्यक्ति को घर, परिवार, समाज, राष्ट्र व विश्व से अपनत्व का अहसास करा सके, अर्जित ज्ञान को व्यावहारिक रूप प्रदान कर सके, जीवन के संघर्षों को समझने और उनसे जूझने की क्षमता प्रदान कर सके। जीवन की आपत्तियों से घबरा कर कायरों की तरह पलायन करने की अपेक्षा विवेक सम्मत सामना कर सके। वस्तुतः जीवन कौशल शिक्षा अर्जित ज्ञान, आत्मावलोकन, चिन्तन एवं रचनात्मकता के माध्यम से जीवन से जुड़े तनावों, भावनाओं व संवेदनाओं के साथ समन्वय एवं सन्तुलन पैदा करने की क्षमता प्रदान करती है। जीवन कौशल शिक्षा से सम्प्रेषण एवं अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों में आशाजनक परिवर्तन आता है। समस्या समाधान, विवेक सम्मत निर्णय, पहल, दक्षता आदि जीवन कौशल शिक्षा की देन है। जीवन का एकाकीपन सन्तुष्टि प्रदान करने वाले रचनात्मक कार्यों से परिपूर्ण होता है, न कि भौतिकता की चकाचौंध से। स्वयं के बारे में चिन्तन, परिवार व समाज के बारे में चिन्तन तथा चिन्तन के पश्चात् सही निर्णय लेने की क्षमता जीवन कौशल शिक्षा प्रदान करती है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

मनुष्य होना अपने आप में जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता को जन्म देता है। अन्य जीव अपनी नेसर्गिक क्षमताओं को स्वतः ही पा लेते है, पर जो मानव होने का मतलब है वह हमारी भाषा प्रयोग करने की क्षमता, तर्क करने की क्षमता, स्वभाव होने की क्षमता आदि क्षमताएँ होना यह सुनिश्चित नही करती की सभी मानव इन विशिष्ट गुणो से परिपूर्ण होंगे। हमें जाग्रत होना पडता है, हमे अपनी क्षमताओं का प्रयोग करना सीखना पडता है। वास्तव में मानव शिशु इतने अपरिपक्व होते है कि उन्हे खुद के भरोसे छोड़ दिया जाये और दुसरो का मार्गदर्शन और सहायता न मिले तो वे उन मूलभूत क्षमताओं को भी हासिल नही कर पायेंगे जो उनके भौतिक अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसलिए हमें जरूरत होती है–जीवन कौशल शिक्षा की। शोधार्थी द्वारा चयनित शोध कार्य इस क्षेत्र में पूर्णतः नवीन है जो शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही उपयोगी व महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

3. उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य निम्नलिखित उद्दश्यों को ध्यान मे रखकर किया गया है :–

- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत अनुसूचित जाति वर्ग के विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन करना।
- शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध का अध्ययन करना।

4. शोध की परिकल्पनाएँ

अनुसन्धानकर्ता को यदि दो समष्टियों में किसी गुण के माध्य की मापों के अन्तर की अनुसन्धान परिकल्पना की प्रामाणिकता मात्र उन न्यादर्शों के माध्य फलांकों के आधार पर करता है। अनुसन्धानकर्ता के लिए चूँकि सम्पूर्ण समष्टि का मापन करना सम्भव नहीं होता है। अतः इस परिस्थिति में एक सांख्यिकीविद् यह सुझाव देता है कि दोनों समष्टियों में उस गुण का शून्य अन्तर है तथा जो अन्तर उनमें आया है, वह प्रतिचयन की त्रुटि अथवा संयोग के कारण ही आया है। अतः इस प्रकार की परिकल्पना को शून्य परिकल्पना कहा जाता है।

शोध कार्य की परिकल्पना निम्नवत् है–

1. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव से जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध धनात्मक पाया गया है।

5. शोध समस्या का सीमांकन

प्रस्तुत शोध कार्य में समय, व्यय, परिश्रम एवं साधनों को ध्यान में रखते हुए शोध अध्ययन का सीमांकन किया गया है जिससे निर्धारित उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके शोध क्षेत्र का सीमांकन निम्न प्रकार किया जा सकेगा।

1. शोधकर्ता ने अपने कार्य में केवल भारत की मध्यप्रदेश राज्य के खरगौन जिले को समष्टि के रूप में चयन किया गया है। इसके अन्तर्गत 9 विकासखण्ड – खरगौन, कसरवाद, महेश्वर, बड़वाह, गोगाँवा, भीकनगाँव, झिरनिया, भगवानपुरा एवं सेगाँव हैं।
2. शोधकर्ता ने समष्टि में न्यादर्श के रूप में खरगौन जिले के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों को ही चुनाव किया गया है।
3. न्यादर्श के रूप में न्यादर्श के रूप में खरगौन जिला के प्रत्येक विकासखण्ड से 02 शहरी एवं 02 ग्रामीण क्षेत्र के कुल 36 माध्यमिक विद्यालयों में से 360 विद्यार्थियों को (180 शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राएँ + 180 ग्रामीण क्षेत्र के छात्र–छात्राएँ) चयन किया गया।

6. अध्ययन विधि

- **सर्वेक्षण अध्ययन विधि :** सर्वेक्षण अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसके द्वारा शोध समस्या के विभिन्न पक्षों से सम्बन्धित आंकड़ों का संग्रहण किया जाता है। आंकड़े मुख्य तथा वर्तमान स्तर का निर्धारण, वर्तमान स्तर की मान्य स्तर से तुलना, तथा वर्तमान स्तर को विकसित करने में महत्वपूर्ण उपादान होते हैं। सर्वेक्षण में व्यक्ति की अपेक्षा तथ्यों, परिस्थितियों तथा गणनाओं को प्राथमिकता दी जाती है।
- **साख्यिकीय विधि :** सर्वेक्षण विधि से प्राप्त ऑकड़ो का वर्गीकरण एवं सारणीयन किया गया है। जिनकी व्याख्या एवं विश्लेषण हेतु, सांख्यकीय विधियॉ प्रयोग में लाई गयी है। प्रस्तुत शोधकार्य में परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यकीय विधियों द्वारा करने के लिये– सह–सम्बन्ध, Mean, प्रतिशत (%), S.D., 't' Test आदि प्रयोग किये गये है, साथ ही गुणात्मक विश्लेषण पर भी ध्यान रखा गया हैं।

7. शोध उपकरण

शोधार्थी ने न्यादर्श में चयनित माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता का अध्ययन हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली व परीक्षाफल के आधार पर किया गया है।

8. पूर्व अध्ययन समीक्षा

पूर्ववर्ती अध्ययन से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सबन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं, शोध पत्रों तथा अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निमार्ण तथा शोध कार्य करने में सहायता मिलती है इनमें से मुख्य रूप से तिवारी, डॉ.(श्रीमती) रंजना (2016)[1], चौहान, एस.सी. (2003)[2], पाण्डेय, के.पी., (1985)[3], गुप्ता एस.पी. (2001)[4], मेहता, सी. (1970)[5], निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. (1993)[6], सिडाना, प्रसाद, गोमती (2009)[7] एवं कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार (2021)[8] ने शोध विधि एवं माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता से सम्बन्धित कार्य किये है।

9. खरगोन जिले का सामान्य परिचय

खरगोन जिला 21°22′ और 22°35′ उत्तरी अक्षांशों और 74°25′ और 76°14′ पूर्वी देशांतरों के बीच स्थित है। जिला उत्तर में धार, इंदौर और देवास, दक्षिण में महाराष्ट्र राज्य के जलगांव जिले, पूर्व में खंडवा, बुरहानपुर और पश्चिम में बड़वानी से घिरा हुआ है। जिले का क्षेत्रफल 8,030 किमी 2 (3,100 वर्ग मील) है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

सारणी 1 : खरगौन जिला : माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में नामांकित बच्चे (सत्र 2019–20 से 2021–22)

कक्षा	सत्र		
	2019–20	2020–21	2021–22
9	30144	26689	24504
10	22020	21496	22441
11	15235	15916	19757
12	14993	14864	15293

स्त्रोत– मध्यप्रदेश शिक्षा पोर्टल

उपरोक्त सारणी 1 द्वारा स्पष्ट होता है कि खरगौन जिले में माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में नामांकित बच्चे सत्र 2019–20 में कक्षा 9 में 30144, कक्षा 10 में 22020, कक्षा 11 में 15235 कक्षा 12 में 14993 हुये है। सत्र 2019–20 में कक्षा 9 में 26689, कक्षा 10 में 21496, कक्षा 11 में 15916 कक्षा 12 में 14864 हुये है। सत्र 2021–22 में कक्षा 9 में 24504, कक्षा 10 में 22441, कक्षा 11 में 19757 कक्षा 12 में 15293 हुये है।

परिकल्पना क्र. 1 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव से जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है।

सारणी 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव से जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध का अध्ययन

चर (Variable)	संख्या (N)	सहसंबंध (r)	मुक्तांश (df)
शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा	1440	+0.998	1438

′0.05 स्तर पर 'r' का मान = 0.195

अतः उपरोक्त सारणी क्र. 1 के सांख्यिकीय तालिका से इंगित होता है कि माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव से जागरुकता के मध्य सहसम्बन्ध ष्तष् त्र +0.998 एवं df 1438 है। यह 'r' तालिका के 0.05 से ज्यादा है। इसलिए 'r' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना अस्वीकृत हो जाती है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव से जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध पाया जाता है।

परिकल्पना क्र. 2 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध धनात्मक पाया गया है।

सारणी 3 : शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध का अध्ययन

चर (Variable)	संख्या (N)	सहसंबंध (r)	मुक्तांश (df)
बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा	1440	+0.984	1438

′0.05 स्तर पर 'r' का मान = 0.195

अतः उपरोक्त सारणी क्र. 3 के सांख्यिकीय तालिका से इंगित होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता के मध्य सहसम्बन्ध 'r' = +0.984 एवं df 1438 है। यह ष्तष् तालिका के 0.05 से ज्यादा है। इसलिए 'r' का मूल्य सार्थक होने की वजह से परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है।

अतः यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध धनात्मक पाया जाता है।

निष्कर्ष

किसी भी शोध कार्य से प्राप्त निष्कर्ष किये गये शोध कार्य को मान्यता प्रदान करते है। प्रस्तुत शोध के प्रदत्तों के सांख्यिकीय विश्लेषण एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण से प्राप्त हुए तथ्यों के आधार पर प्राप्त शोध निष्कर्षो का विवरण निम्नानुसार हैं–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों की जीवन कौशल शिक्षा के आयामों अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्ध, सृजनात्मक चिंतन, विवेचनात्मक चिंतन, स्वजागरूकता, भावनाओं से जूझना, प्रभावी संप्रेषण, समस्या समाधान, निर्णय लेना, तनावों से जूझना, तद्नुभूति के प्रति जागरुकता पायी गयी।
2. शोध क्षेत्र के माध्यमिक स्तर पर अनुसूचित जाति वर्ग के अध्ययनरत विद्यार्थियों में शैक्षिक विकास एवं जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के प्रभाव से जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध पाया जाता है।

3. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के बुद्धिस्तर एवं जीवन कौशल शिक्षा के प्रति जागरुकता में सार्थक सह–सम्बन्ध धनात्मक पाया जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. तिवारी, डॉ. (श्रीमती) रंजना : "रीवा जिले के गंगेव विकासखण्ड में हाई स्कूल में अध्ययनरत अनुसूचित जाति के बालिकाओं में संचार साधनों के प्रचार–प्रसार द्वारा शिक्षा के प्रति चेतना जागृत का विश्लेषणात्मक अध्ययन" Research Expo International Multidisciplinary Research Journal. 2016;6(1):69-77.
2. चौहान, एस.सी. – अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति शिक्षा का सिंहावलोकन–संवैधानिक प्रावधान, नीतियॉ, एवं क्रियान्वयन, भारतीय आधुनिक शिक्षा, एन.सी.ई.आर.टी., 2003; वर्ष–24, अंक–3, पृष्ठ–85–102.
3. पाण्डेय, के.पी. – मनोविज्ञान और शिक्षा में सांख्यिकी, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 1985.
4. गुप्ता एस.पी. – आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद संस्करण, 2001.
5. मेहता, सी. – नेशनल पॉलिसीर ऑफ एलिमेन्ट्री टीचर एजूकेशन इन इण्डिया, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली, 1970.
6. निगम, बी.के. तथा शर्मा, एस.आर. – भारतीय शिक्षा का इतिहास एवं समस्यायें, (प्रथम संस्करण) कनिष्ठ प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993.
7. प्रसाद, गोमती–रीवा संभाग की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के बालक–बालिकाओं की शैक्षिक स्थिति का समीक्षात्मक अध्ययन, अप्रकाशित शोध ग्रन्थ शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म.प्र.), 2009.
8. कुशवाहा, उमाशंकर एवं श्रीवास्तव, डॉ. अखिलेश कुमार – सतना जिले में किशोरावस्था के छात्र व छात्राओं में मानवीय मूल्यों का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन, International Journal of Applied Research. 2021;7(1):400-403.